हमको फिर छुट्टी

चकमक (जनवरी, 1989 से दिसम्बर, 1991) में प्रकाशित,
बच्चों द्वारा लिखी कविताओं का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

हमको फिर छुट्टी

HUMKO PHIR CHHUTTI

चकमक में प्रकाशित बच्चों द्वारा लिखी कविताओं का संकलन

संस्करणः फरवरी 1997/3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः फरवरी 1999/5000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2004/3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रणः मार्च 2008/3000 प्रतियाँ
संशोधित संस्करणः अक्तूबर 2008/15000 प्रतियाँ
पाँचवाँ संस्करणः नवम्बर 2008/30000 प्रतियाँ
छठवाँ संस्करणः नवम्बर 2008/30000 प्रतियाँ
सातवाँ संस्करणः दिसम्बर 2008/60000 प्रतियाँ
आठवाँ संस्करणः दिसम्बर 2008/60000 प्रतियाँ
कागज़ः 80 gsm मेपलिथो व 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित।

ISBN: 978-81-87171-11-9
मूल्यः 12.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 म.प्र.
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

आवरणः सुमित कुमार, सात वर्ष, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
चकमक अक्तूबर, 1991 में प्रकाशित

पिछला आवरणः श्यामबिहारी सिंह कमरिया, छठवीं, ऊँचिया, दतिया, म.प्र.
चकमक अप्रैल, 1989 में प्रकाशित

मुद्रकः आदर्श प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, भोपाल, फोनः (0755) 255 5442
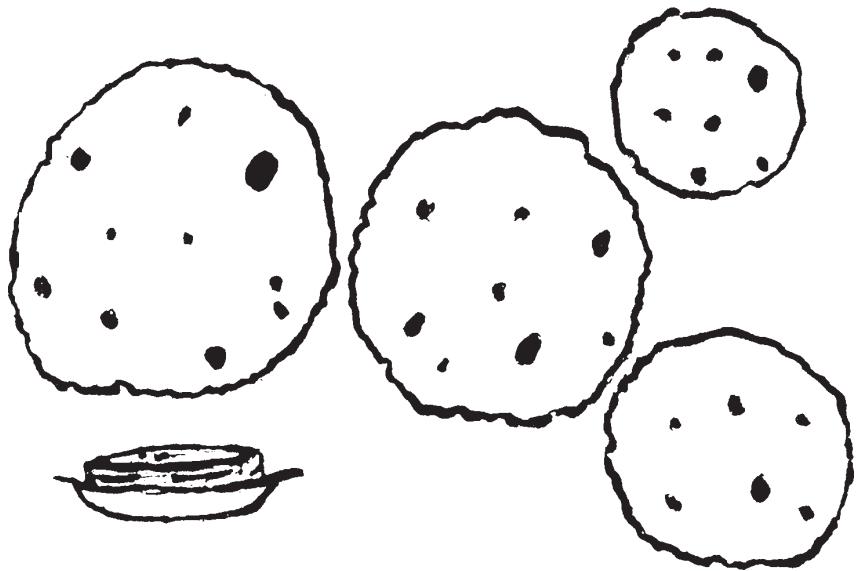
आलू का पराँठा

❑ श्वेता पारीख

आलू का पराँठा करता है तमाशा
आलू का पराँठा जल जल जाता
सेंकने में इसको हाथ जल जाता
पर खाने में खूब मज़ा आता

छुन-छुन तवे पे शोर मचाता
गरम-गरम खाने से मुँह जल जाता
मुँह में पहुँच ये खुल-खुल जाता
पेट में जाकर शैतानी खूब मचाता।

श्वेता पारीख, पाँचवीं, तथा सुरेश, पाँचवीं, सवाई माधोपुर, राजस्थान।
कविता तथा चित्र फुलवारी (सवाई माधोपुर से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका) तथा चकमक फरवरी, 1990 में प्रकाशित।

रेलगाड़ी

❑ आशु खुल्लर

छुक-छुक कर के जाए गाड़ी,
सब के मन को भाए गाड़ी

पटरी पर यह गाड़ी चलती,
बहुत तेज़ यह गाड़ी चलती,
अन्दर लगता जैसे धरती चलती।

ऊपर से तो धुआँ निकलता,
जल्दी-जल्दी रास्ता कटता,
समय का तो पता नहीं लगता।

दिन रात यह गाड़ी चलती,
कभी नहीं यह गाड़ी थकती,
लम्बा-लम्बा सफर तय करती।

आकाश में चाहे छाया हो मेघ,
चाल चाहे धीमी हो या तेज़,
चलना है इसके लिए एक खेल।

आशु खुल्लर, नवमीं, चण्डीगढ़। चकमक जनवरी, 1990 में प्रकाशित।
प्रवीण खरे, पाँचवीं, बीना, म.प्र.।

प्रवीण खरे

देश विदेश में है यह गाड़ी
वहाँ भी लगती सबको प्यारी,
कह लो चाहे इसे रेलगाड़ी।

दूर-दूर पहुँचाए गाड़ी,
बिछड़ों को मिलाए गाड़ी,
यही है अपनी प्यारी गाड़ी।

छुक-छुक कर के जाए गाड़ी,
सब के मन को भाए गाड़ी।
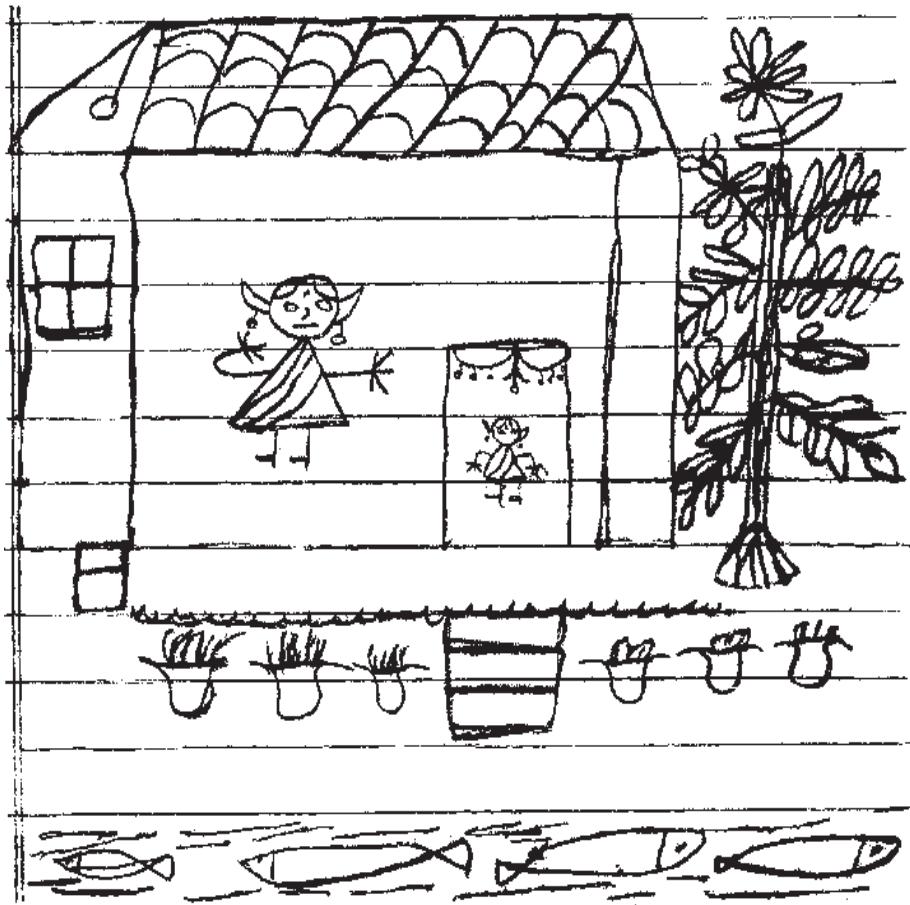
शिवानी

मेरी शाला

❑ अनुराधा दुबे

कच्ची खपरैलों वाली मेरी शाला
रोज़ सबेरे खुल जाती है
जब बरसता है पानी
तब हमारी छुट्टी हो जाती है।

छुट्टी होते ही हम इमली-कैथा के
पेड़ों के नीचे दौड़े जाते हैं
साथ में तोड़ने के लिए
पत्थर भी बीन ले जाते हैं।

सहेलियाँ पेड़ पर भी
चढ़ जाती हैं,
कैथा-इमली तोड़कर नीचे गिराती हैं।

एक दिन तीरथ पण्डित जी
ने देख लिया
सबको बुलाकर बेशरम
की डण्डी से पीट दिया
तब से हम छुट्टी होते ही
घर आ जाते हैं!

अनुराधा दुबे, भरेवा, शहडोल, म.प्र.। चकमक दिसम्बर, 1989 में प्रकाशित।
शिवानी, देवास, म.प्र.। चकमक सितम्बर, 1991 में प्रकाशित।

स्वास्थ्य मंत्री का दौरा

❑ अभिलाषा सिंगोरिया

सरकारी अस्पताल
वालों ने सुना
जैसे ही कि स्वास्थ्य मंत्री का
दौरा है

डॉक्टर दौड़े
नर्सें दौड़ीं, कम्पाउण्डर दौड़े
वार्ड बॉय दौड़े
दौड़े स्वीपर लेकर झाड़ू

घर की (मरीजों की) सभी चद्दरें उठवाईं
चिकित्सालय की नई
चद्दरें बिछवाईं
गन्दगी दूर करवाई
सफाई चारों ओर
पर जब सुना कि मंत्री
नहीं आएँगे

अभिलाषा सिंगोरिया, नवमीं, कुक्षी, धार, म.प्र.। संतोष।
कविता तथा चित्र चकमक अक्तूबर, 1989 में प्रकाशित।

आनन-फानन झटपट
वार्ड बॉय आए
घरों की चद्दरें बिछवाईं

वाह रे वाह!
स्वास्थ्य मंत्री का दौरा!
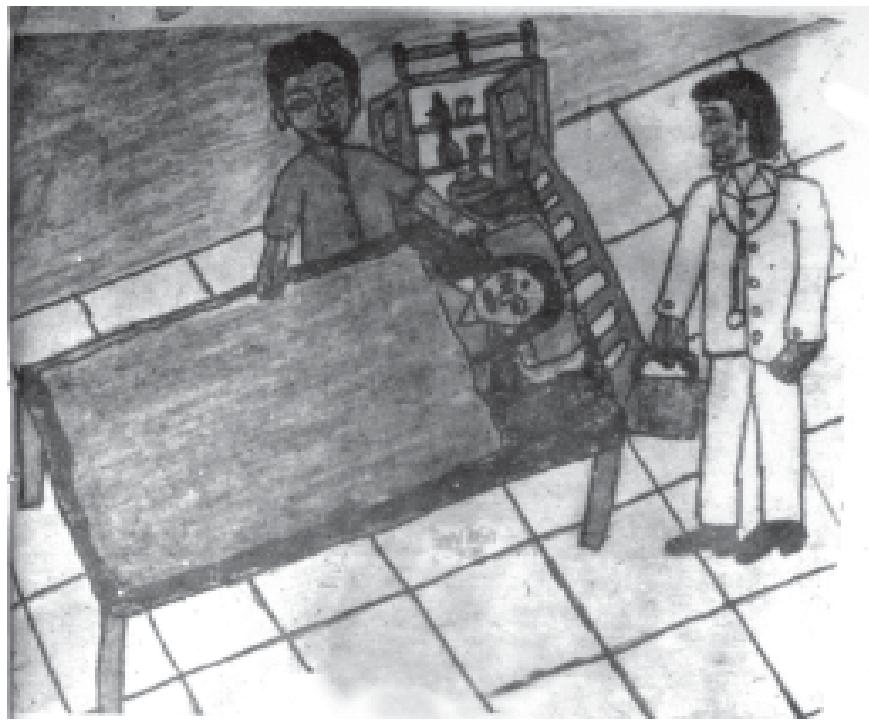
संतोष
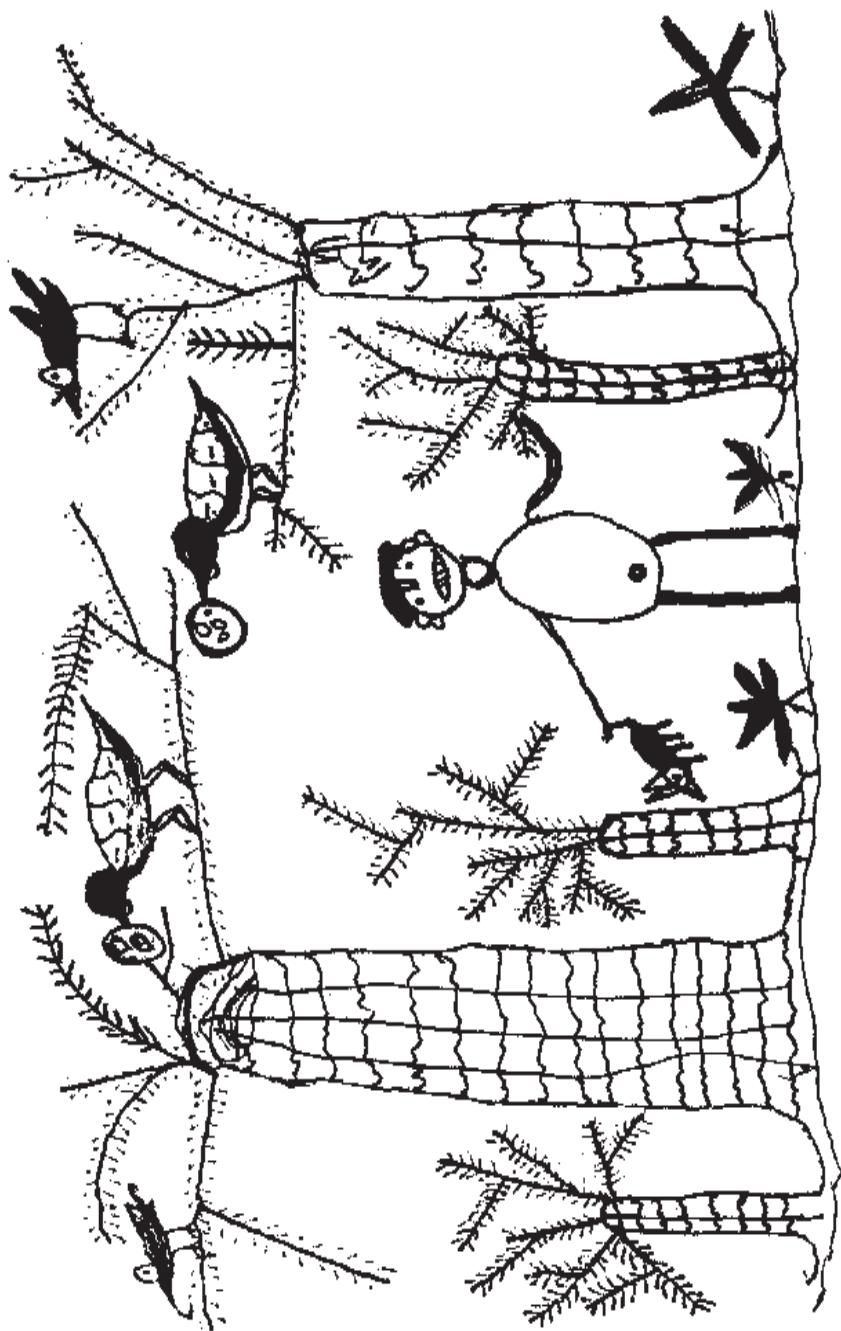
दामोदर सिंह

कोयल

❑ **अभिषेक शर्मा**

कोयल काली-काली-सी
उसकी आवाज़ निराली-सी
पेड़ों पर फिरती रहती है
मधुर कूक सुनाती है।

भैंस

काली-काली वह मतवाली
सूखी घास खाती है
दिन भर मुँह चलाती है
जल में बैठी रहती है
दूध हमें वह देती है।

अभिषेक शर्मा, सातवीं, इन्दौर, म.प्र.। चकमक अगस्त, 1990 में प्रकाशित।
दामोदर सिंह, पाँचवीं, उँचिया, दतिया, म.प्र.। चकमक फरवरी 1990 में प्रकाशित।

करनदीप

घर

❑ गौरी

लगता मुझको प्यारा घर
मेरा हमारा अपना घर
है जहाँ पौधे हरे-हरे
फूल पत्तियों से लदे-लदे
सुख शान्ति प्यार ही प्यार
रहती जहाँ सदा बहार ही बहार
हो चाहे दुख की धूप
मिलकर हैं हम सब तैयार
फूलों का चमन यह, काँटे भी हैं
पर नहीं डरते हम, ज़िन्दगी है
तो दुख भी...
फूल होंगे राहों में, तो काँटे भी...।

गौरी, पटना, बिहार। नई किरण (पटना से बच्चों द्वारा प्रकाशित एक पत्रिका) तथा चकमक दिसम्बर, 1991 में प्रकाशित। करनदीप, पहली, चण्डीगढ़।

मेरा बस्ता

❑ स्वाति शर्मा

मेरा बस्ता बड़ा बेकार।
बोझ है इसमें बेशुमार।।

रोज़ रोज़ जाना पड़ता है।
इसको स्कूल लेकर यार।।

कॉपी किताबें ढेर सारी।
पन्ने...उफ! कई हज़ार।।

टिफिन है छोटा, बड़ी किताबें।
एक विषय की कॉपी चार।।

मेरा बस्ता बड़ा बेकार।
फिर भी रोज़-रोज़ जाते हैं।
इसको स्कूल लेकर यार।।

स्वाति शर्मा, सवाई माधोपुर, राजस्थान। फुलवारी तथा चकमक, दिसम्बर, 1991 में प्रकाशित।
अखिलेश बिसेन, छठवीं, वारासिवनी, म.प्र.। चकमक दिसम्बर, 1991 में प्रकाशित।

अखिलेश बिसेन

(चित्रकार का नाम-पता नहीं मालूम)

भोला किसान, बनिया शैतान

❑ ज्योति तिवारी

छोटा बाज़ार
कपड़े का व्यापार
बहुत-सी दुकान
बनिये शैतान

तोंद बढ़ाते
पैसे कमाते
भोला किसान
बहुत नादान

गाढ़ी कमाई
बनियों ने छुड़ाई
किसान उदास
बनिये-बदमाश

मौज उड़ाते
तोंद बढ़ाते
दूसरे का पैसा
गड़प जाते

ज्योति तिवारी, नौ वर्ष, लोहरदा, देवास, म.प्र.। चकमक, जून 1989 में प्रकाशित।
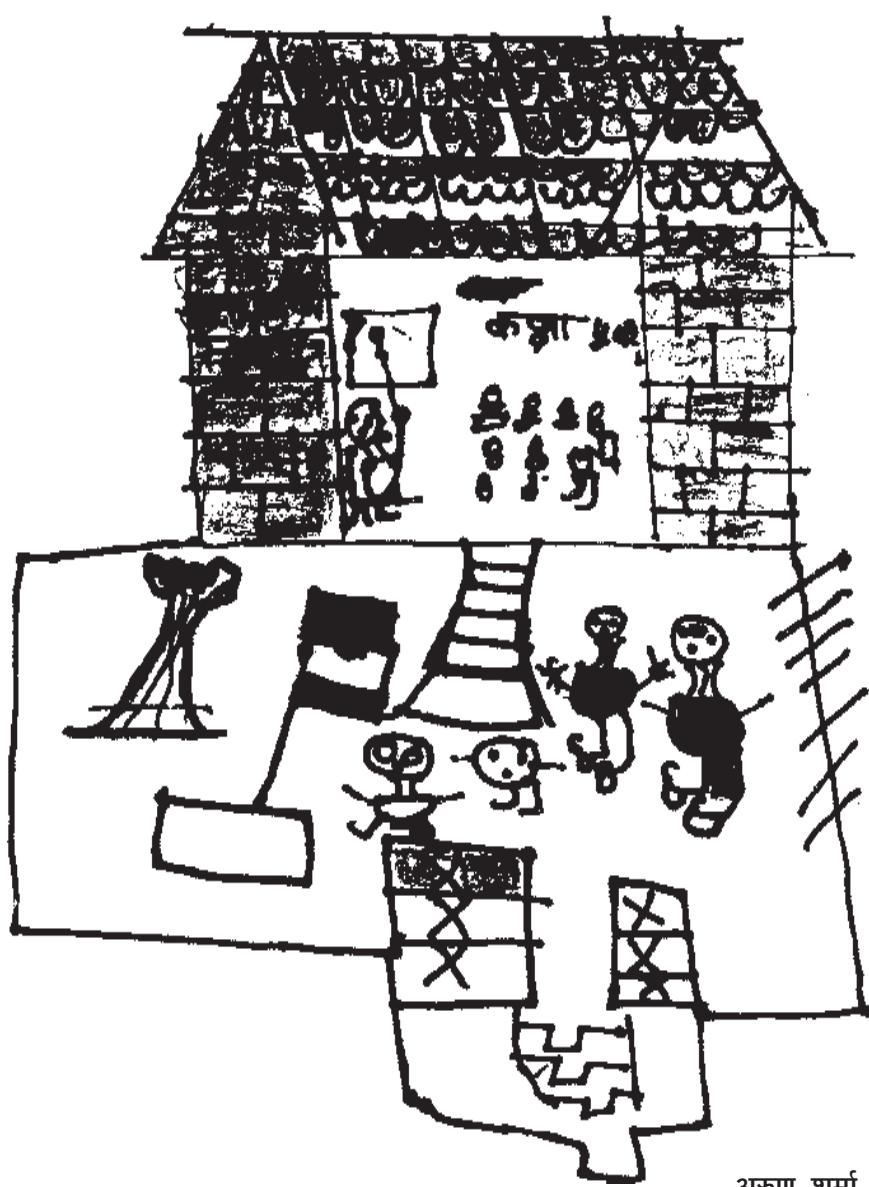
अरुण शर्मा

हमको फिर छुट्टी

❑ तोनिमा मुकर्जी

सोम, सोम, सोम
हमारी टीचर गई रोम
हमको फिर छुट्टी

मंगल, मंगल, मंगल
हमारी टीचर गई जंगल
हमको फिर छुट्टी

बुध, बुध, बुध
हमारी टीचर का हो गया युद्ध
हमको फिर छुट्टी

वीर, वीर, वीर
हमारी टीचर ने बनाई खीर
हमको फिर छुट्टी

शुक्रवार, शुक्रवार, शुक्रवार
हमारी टीचर पड़ गई बीमार
हमको फिर छुट्टी

रवि, रवि, रवि
हमारी टीचर बन गई कवि
हमको फिर छुट्टी

तोनिमा मुकर्जी, दस वर्ष, इटारसी, म.प्र.। अरूण शर्मा, पाँचवीं, हरदा, म.प्र.।
कविता तथा चित्र चकमक मई, 1989 में प्रकाशित।
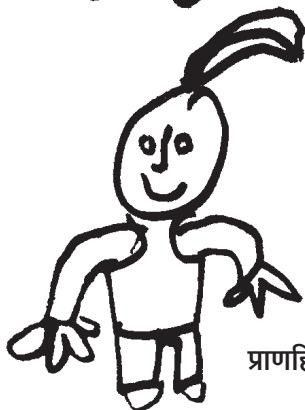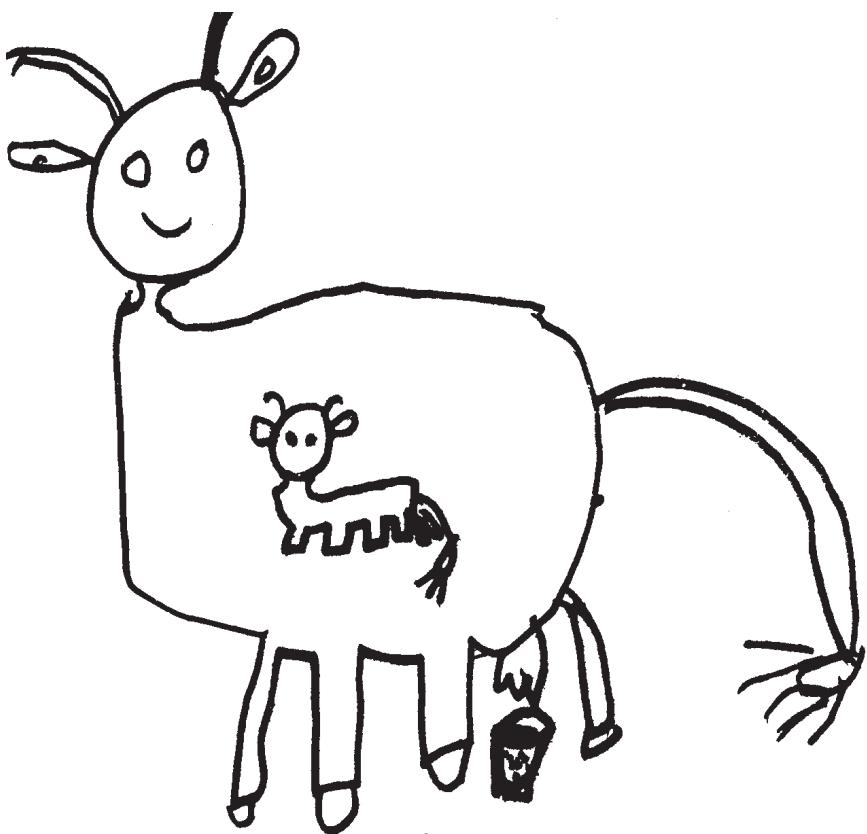
प्राणहिता सेन

कटिया

❑ चन्द्रपाल दूहण

हमारी भैंस ने पैदा की एक कटिया,
छोटी-सी सुन्दर थी वह कटिया।

वह सुस्त-सी पड़ी थी,
भैंस उसे चाट रही थी।

बिजली की-सी फुर्ती से वह हुई खड़ी,
उछल-कूदते वह धड़ाम से गिर पड़ी।

फिर से वह उठी,
लगता था हो गई भूखी।

फिर उसको हमने दूध पिलाया,
कई दिन बाद हमने उसको नहलाया।

हम बच्चों को लगती है वह प्यारी
माँ ने नाम रखा उसका दुलारी।

चन्द्रपाल दूहण, करेला, हरियाणा। प्राणहिता सेन, पाँच वर्ष, रायपुर, म.प्र.।
कविता तथा चित्र चकमक अप्रैल, 1991 में प्रकाशित।

तस्वीर

❑ सौम्या

एक बच्चा तस्वीर बनाता है
किसी को मालूम है, कहाँ पहुँचती है वो!
फिर वह उसे फेंक देता है!
एक बच्चा उसे उठाता है
रंग भरकर बच्चा उसे फेंक देता है।
एक बच्चा उसे फाड़ देता है
एक बच्चा उसे उठाता है,
सारे टुकड़े जोड़ता है।
कोई जानता है, कौन है वो?
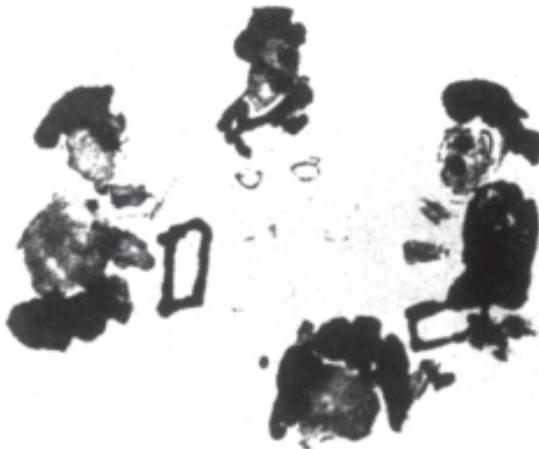
सौम्या, चौथी, भोपाल, म.प्र.। अविनाश मेढालकर, देवास, म.प्र.।
कविता तथा चित्र चकमक मई, 1991 में प्रकाशित।
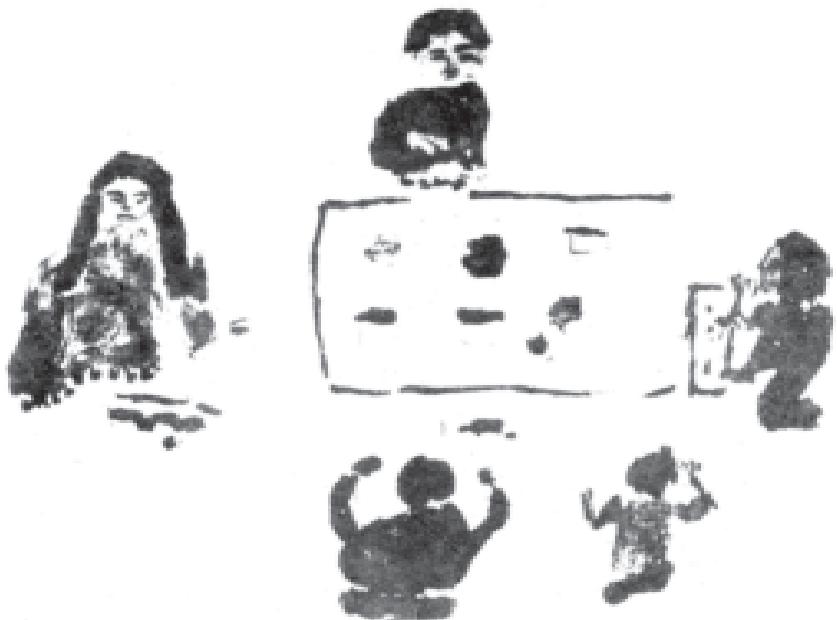
दोनों चित्रः अविनाश मेढालकर

नहीं
अगर तुम में से कोई जानता होता
तो तस्वीर लाता, उसे देखकर
तारीफ करता उस बच्चे की
जिसकी वजह से वह तस्वीर तुम्हें
देखने को मिली
चुप नहीं बैठता इस तरह!

श्रीजा
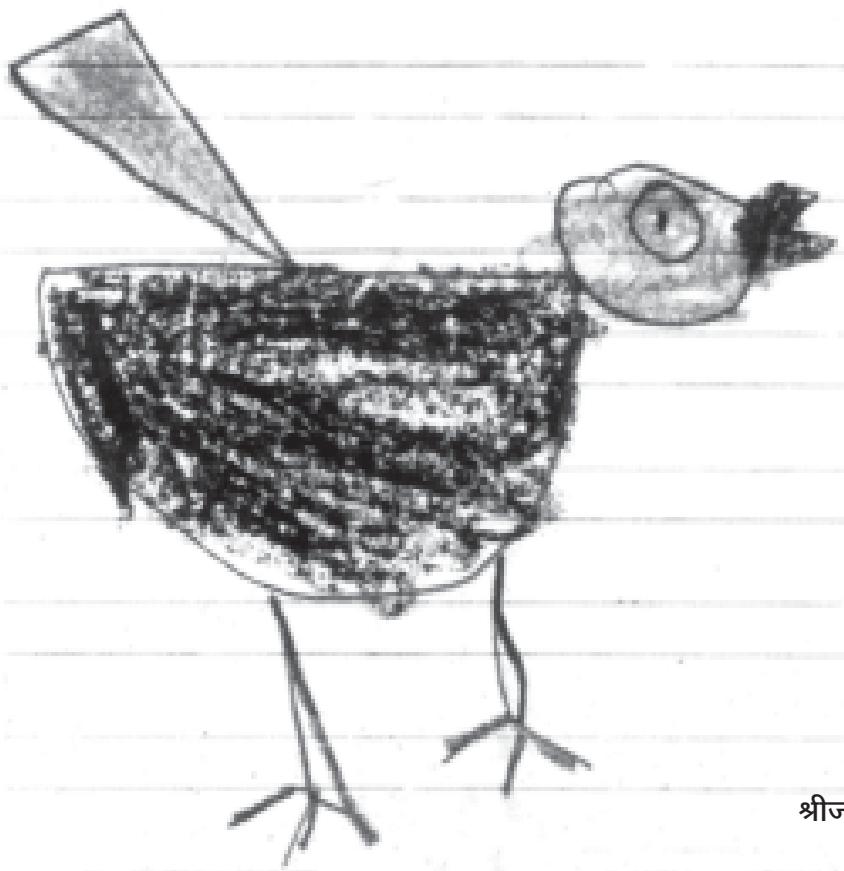
नन्ही चिड़िया

❑ श्यामल सरस

छोटी-सी एक चिड़िया
रात को सोती चिड़िया
दाने चुगती चिड़िया
चूँ-चूँ करती चिड़िया

सुबह-सुबह आइने पर टुकटुक
खूब सताती मईया
यह चिड़िया कोई और नहीं
मेरे घर की गौरैया।

श्यामल सरस, नौ वर्ष, दुर्ग, म.प्र.। चकमक जुलाई, 1990 में प्रकाशित।
श्रीजा साढ़े पाँच वर्ष, भोपाल, म.प्र.।
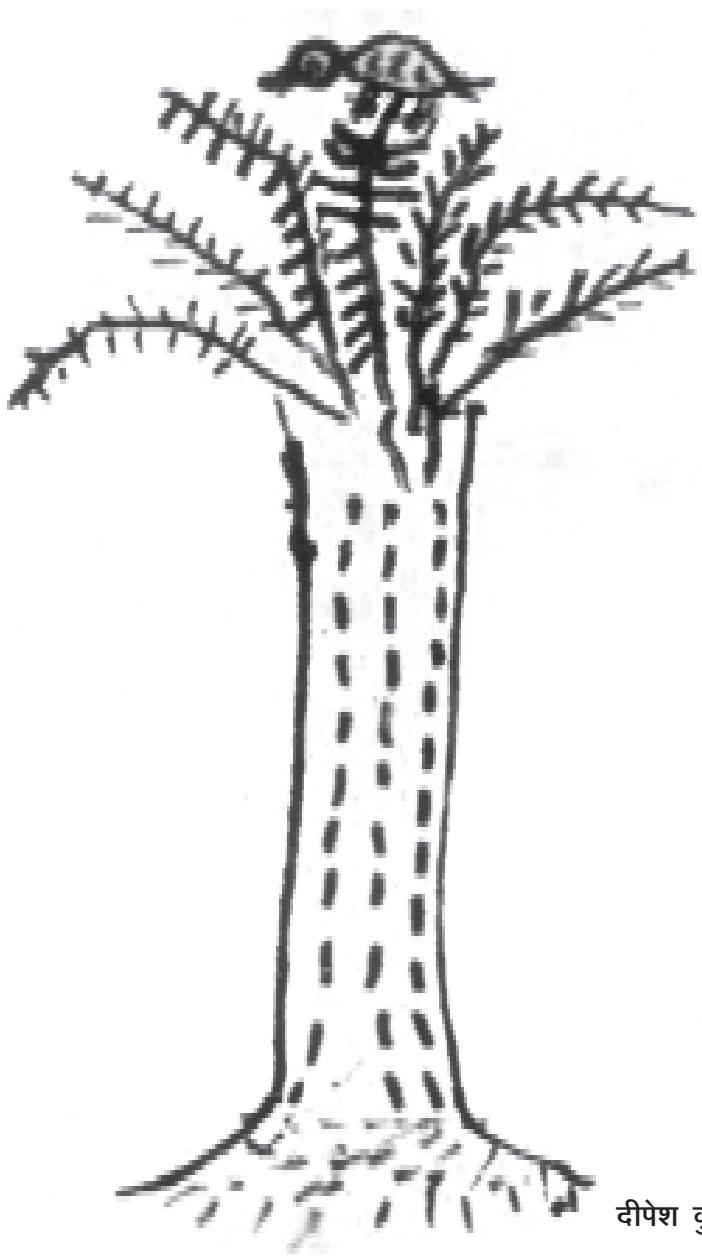
दीपेश कुमार

पतझड़

❑ अपूर्व त्रिवेदी

पतझड़ आया, पतझड़ आया
झड़ गए सब पत्ते
जब आए नए पत्ते
रंग था लाल,
अभी थे बच्चे।

पतझड़ के मौसम में
पेड़ खड़ा था बिन पत्ता
अब न था पेड़ पर कोई पत्ता
धूप से झुलसता भूखा पेड़
ऐसा था पतझड़ का मौसम,
बेरहम।

मौसम आया गर्मी का,
निकलीं कोपलें नई जब,
पेड़ हुआ हरा-भरा
मानों देता धन्यवाद
ग्रीष्म को!

अपूर्व त्रिवेदी, दस वर्ष, इन्दौर, म.प्र.। चकमक जुलाई, 1990 में प्रकाशित।
दीपेश कुमार, दूसरी, उमरवाही, राजनांदगाँव, म.प्र.।

मेरा भारत महान!

❑ निलेश राठौर

पेट में रोटी नहीं
तन पर कपड़ा नहीं
नहीं सिर पर मकान है
फिर भी गर्व से कहते हैं हम
कि भारत हमारा महान है!
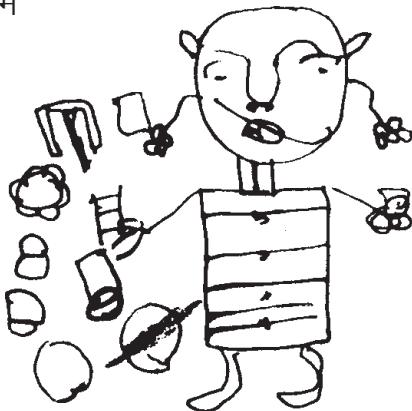
राधा

जिन हाथों में होने थे खिलौने
जिन हाथों में होनी थी पुस्तकें
उन हाथों में आज होटल की
जूठी प्लेटें हैं
उन हाथों में बूट पॉलिश का सामान है।
फिर भी गर्व से कहते हैं हम
कि भारत हमारा महान है!

निलेश राठौर, दसवीं, खरगौन, म.प्र.। मधुबाला, चौथी; राधा, श्रीकांता, छठवीं, मानकुण्ड, देवास, म.प्र.। कविता तथा चित्र चकमक नवम्बर, 1989 में प्रकाशित।
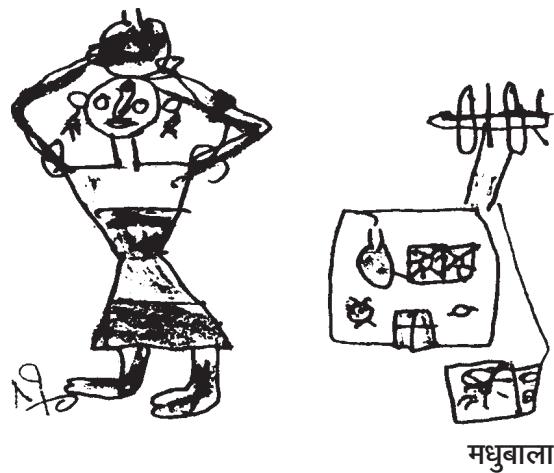
मधुबाला

भुखमरी से बिलखता हुआ
कुपोषण से सिसकता हुआ
अपनी गरीबी पर रोता हुआ
वह इन्सान अपनी ज़िन्दगी से परेशान है!
फिर भी गर्व से कहते हैं हम
कि भारत हमारा महान है।
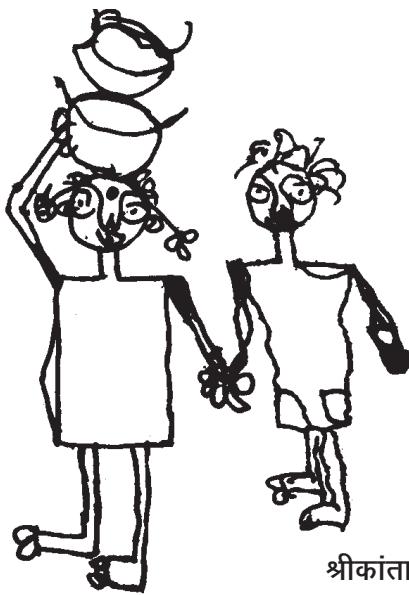
श्रीकांता

रिमझिम-रिमझिम

❑ रोली एस. चन्द्र

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।
सभी जगह हरियाली लाई
हरे वृक्ष हैं हरे हैं वन
हरे-हरे दिखते उपवन
हरियाली की चादर छाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

उफन पड़े हैं नदियाँ नाले
इन पर लहरें डेरा डाले
उछल कूद कर रही हैं भाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

खुश हो रहे किसान हमारे
हल लेकर चल पड़े हैं सारे
खुशियाँ कृषकों की हैं लाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

सारी धरती है आनन्दित
सबके ह्रदय आज हैं पुलकित
धरती का ृंगार भी लाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

रोली एस. चन्द्र, आठवीं, उमरिया, शहडोल, म.प्र.। चकमक सितम्बर, 1990 में प्रकाशित। गिरिराज सिंह सिकरवार, पाँचवीं, पंचमपुरा, मुरैना, म.प्र.।

गिरिराज सिंह सिकरवार

आपस की बात

चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित एक मासिक बाल पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

"*हमको फिर छुट्टी*" चकमक में प्रकाशित बच्चों द्वारा लिखी गई कविताओं का दूसरा संकलन है। पहला संकलन "*प्यारा लड्डू*" नाम से 1989 में प्रकाशित हुआ था।

"*प्यारा लड्डू*" में चकमक के प्रवेशांक (जुलाई, 85) से दिसम्बर 88 तक के अंकों से चुनी कविताएँ ली गई थीं। प्रस्तुत संकलन में जनवरी, 89 से दिसम्बर, 91 तक के अंकों से चुनी रचनाएँ ली गई हैं।

तीन कविताएँ ऐसी हैं जो मूल रूप से पहले दो अन्य बाल पत्रिकाओं (जो सायक्लोस्टाइल रूप में निकलती हैं) में प्रकाशित हुई थीं।

अधिकांश कविताओं के साथ चित्र भी वही हैं, जो चकमक में प्रकाशित हुए थे। कुछ कविताओं के साथ नए चित्र भी प्रकाशित हो रहे हैं। आवरण पृष्ठों पर प्रकाशित चित्र भी जनवरी, 89 से दिसम्बर, 91 तक के अंकों से लिए गए हैं।

रचनाकारों व चित्रकार के नाम के साथ उनकी उम्र या कक्षा का उल्लेख है। यह उम्र या कक्षा रचना लिखते समय या चित्र बनाते समय की है।

चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति को मंच देना है। चकमक में प्रकाशित रचनाएँ इस बात को ध्यान में रखकर ही चुनी जाती हैं। बावजूद इसके कभी-कभी नकल की हुई रचनाएँ भी प्रकाशित हो जाती हैं। इस संकलन में शामिल रचनाएँ मौलिक हों, हमारा यह प्रयास रहा है।

एकलव्य समूह
फरवरी, 1997